प्रतिवेदन

राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच

अंतर्राष्ट्रीय तरंग परिचर्चा (वेबीनार)

पख्तून तहफ्फुज आन्दोलन (पीटीम) पाकिस्तानी दमन नीति

28 जून, 2020 (रविवार)

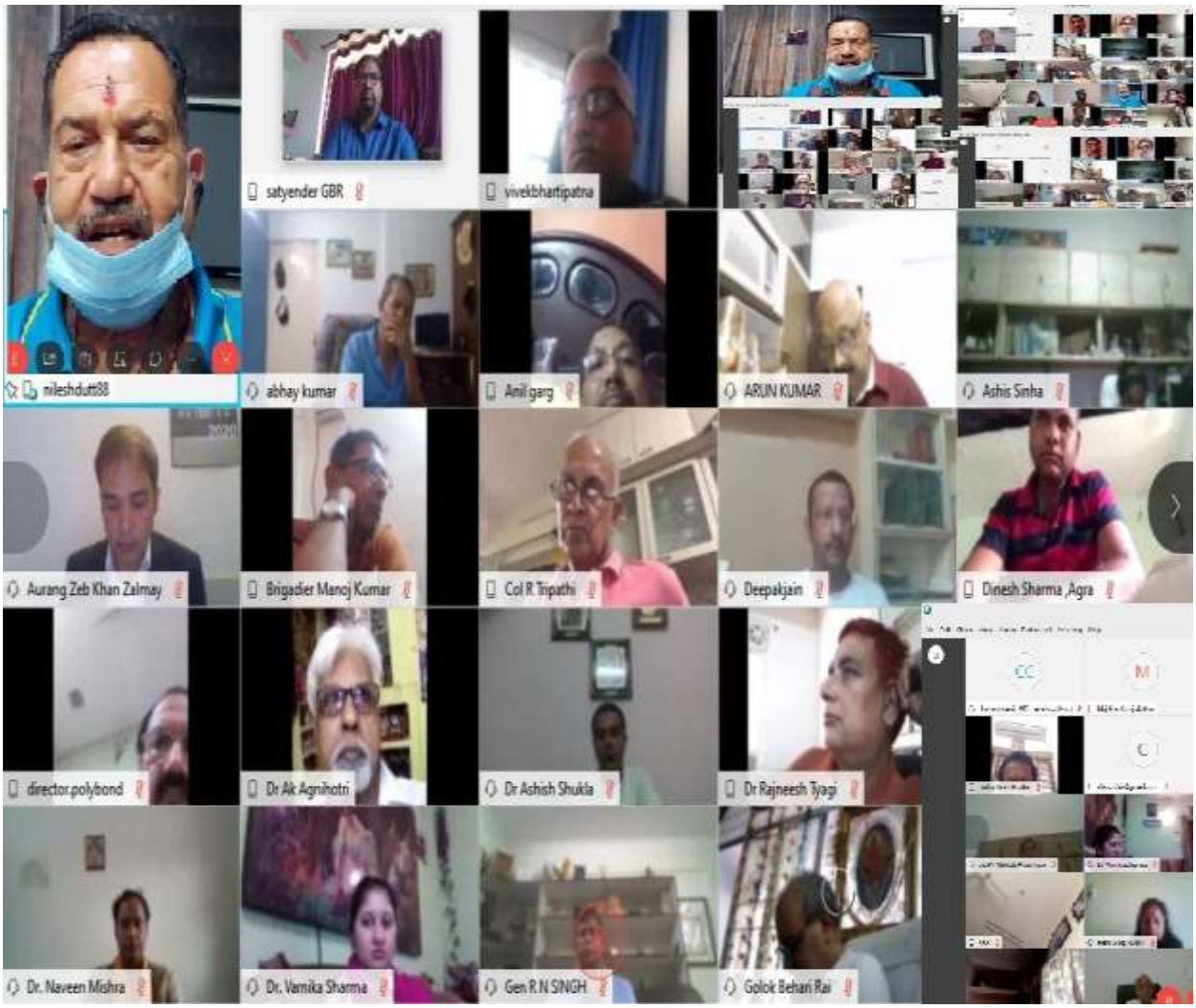

पख़्तून तहफ़ूज मूवमेंट की पहचान पर संकट

राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच (फैन्स , फोरम फॉर अवेयरनेस ऑफ नेशनल सिक्योरिटी) की ओर से 28 जून, 2020 (रविवार) को "*वजीरिस्तान (पख्तून- तहफ़ूज मूवमेंट) के पहचान का संकट*" विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार में देश-विदेश के कई नामचीन हस्तियों ने हिस्सा लिया। इस वेबिनार के शुरुआती सत्र को संबोधित करते हुए फैन्स के संरक्षक व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल सदस्य श्री इंद्रेश कुमार ने पश्तून लोगों के आंदोलन को समर्थन देते हुए कहा कि आज पाकिस्तान की करतूत पूरी तरह बेनकाब हो चुकी है। पश्तून समुदाय के लोगों पर पाकिस्तान सरकार व पाक सेना की ओर से विगत कई दशकों से अनवरत अत्याचार किए जा रहे हैं। वहीं, पश्तून समुदाय के लोगों ने अब अपनी अस्मिता व पहचान को लेकर अपनी लड़ाई तेज कर दी है। *पश्तून-तहफ़ूज मूवमेंट* के तहत अब इस समुदाय के लोग कुर्बानियां देने के लिए तैयार हैं। समय के साथ अब पश्तूनों का यह आंदोलन पूरे सीमाई क्षेत्र में जोर पकड़्ता जा रहा है। आज पाकिस्तान खुद भी आंतरिक तौर पर कई आंदोलनों से जूझ रहा है। यूं कहें कि पाकिस्तान आज कई आंदोलनों में विभाजित है और कई तरह की चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसी के मद्देनजर अब पाकिस्तान पश्तूनों के आंदोलन को दबाने व कुचलने में लगा है। अफगानिस्तान की सीमा से लेकर कश्मीर तक जितने भी पश्तून हैं, उन्हें तरह-तरह की यातनाएं दी जा रही हैं। इस समुदाय की महिलाओं, युवाओं पर खासा जुल्म किया जा रहा है ।

पाकिस्तान के अंदर 20 तरह के आंदोलन चल रहे हैं यह आंदोलन मानवीय अधिकार और अपने स्वतंत्रता के लिए किया जा रहा है । आंदोलन आज का नहीं 1946 में जिस समय पाकिस्तान का निर्माण हो रहा था उसी समय से इस आंदोलन का शुरुआत हो गई थी ।

श्री इंद्रेश कुमार-

सदस्य अखिल भारतीय कार्यकारिणी मण्डल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, संरक्षक राष्ट्रीय *सुरक्षा जागरण मंच*–

पाकिस्तान की सरकार और सेना दोनों मिलकर पख्तून समाज के लोगों पर काफी बर्बरतापूर्ण कार्रवाई कर रही है। इनके मानवाधिकारों को कुचला जा रहा है, बहू-बेटियों की इज्जत को तार तार किया जा रहा है। पाकिस्तान में इस समुदाय के लोगों पर अत्याचार की खबरें अब दुनिया के सामने आने लगी है। पश्तून लोग अब अपने मानवाधिकारों को लेकर पुरजोर ढंग से आवाज उठाने लगे हैं। पाकिस्तान सेना के जुल्मो-सितम को सहकर वे अब एकजुट होने शुरू हो गए हैं। बीते कई सालों में हजारों निर्दोष पश्तून लोगों को अपनी जान गंवानी पडी। इतिहास को देखें तो यह स्पष्ट है कि इस समुदाय का पाक सरकार ने जमकर दोहन व दुरुपयोग किया। ये पाक के हुक्मरानों के हाथों हमेशा छले गए। ऐसे में अब जहां-जहां उनके मानवाधिकार कुचले जा रहे हैं, हर भारतीय का कर्तव्य है कि उन्हें सहारा दें, उनकी आवाज को बल दें ताकि वे अपने मानवाधिकारों की रक्षा कर स्वतंत्र जीवन जीने में सक्षम हो सकें। और यह समय की जरूरत भी है कि पश्तूनों की आवाज बुलंद हो सके ताकि पाकिस्तानियों की बर्बरता से उन्हें निजात मिल सके। मौजूदा समय में पश्तून तहफ़ूज आंदोलन यानी पीटीएम का प्रभाव कराची तक है और पीटीएम की यह पुरजोर मांग है कि एक सार्वभौम, स्वतन्त्र व स्वायत्त वजीरिस्तान का निर्माण हो। ज्ञात हो कि इस समय पाक सेना के लाखों जवान वजीरिस्तान के तहत आने वाले 13 क्षेत्रों में तैनात हैं और वहां रहने वाले जनजातियों पर आए दिन कहर बरपाते रहते हैं।

पाकिस्तान के इस क्रूर चेहरे को अब वैश्विक पटल पर उजागर किए जाने की जरूरत है। पश्तून आंदोलन की कुछ महत्वपूर्ण बातों को भी दुनिया के लिए जानना जरूरी है। दुनिया भर में पश्तूनों को एकजुट

होकर अपनी स्वायत्ता को लेकर संघर्ष जारी रखना चाहिए। इस समुदाय के सभी युवाओं को पश्तून अस्मिता के लिए साथ आना चाहिए। पाक के अत्याचार से पश्तूनों को बचाना जरूरी है और इन्हें काफिर कहना बिल्कुल गलत है। पाकिस्तान के अमानवीय व अत्याचारी चरित्र को विभिन्न प्रदर्शनों, मीडिया व सोशल मीडिया के जरिये उजागर करना चाहिए। पश्तूनों के आंदोलन को मानवता के समर्थक भारत की तरफ से साथ देने का साफ संदेश होना चाहिए। पख़्तून आंदोलन का समर्थन वैश्विक स्तर पर होना चाहिए | पाकिस्तान के नापाक इरादे व घिनोनी करतूत के बारे मे विश्व को अवगत कराया जाय कि आज देश-विदेश मे पख्तून समाज के लोग एकजुट होते जा रहे हैं, और पाकिस्तान और पाकिस्तान की नीति मिलिट्री एंव हुक्मरानों का विरोध कर रहे है, अपनी अस्मिता और पहचान को वापिस पाने के लिए अपनी लड़ाई को तेज़ कर रहे हैं और पख़्तून मूवमेंट के तहत कुर्बानियां देने को तैयार हैं | सीमा पार पाकिस्तान में पख़्तून मूवमेंट आंदोलन तेज होता जा रहा है, क्योंकि लगातार वहाँ के हुक्मरान और मिल्ट्री पख़्तूनों पर जुल्म कर रहे हैं । उनका कत्ल हो रहा है, उनकी बस्तियां उजाड़ी जा रही है और उनकी बहू-बेटियों की इज़्ज़त लूटी जा रही है । पाकिस्तान मे पख़्तूनों की स्थिति बहुत दयनीय हैं इसके साथ ही वहाँ हो रही करतूतों और वहाँ की सेना किस तरह से पख़्तूनों पर अत्याचार कर रही है, के बारे में सभी को अवगत कराया जाय । अब ये खबरें पूरी दुनिया के सामने आने लगी है। उन्होंने बताया कि विगत वर्षों मे हज़ारों निर्दोष पख़्तूनों को अपनी जान गंवानी पड़ी है । इतिहास के पन्नों में यह दर्ज है कि इस समुदाय का हमेशा दोहन और दमन हुआ है। आज़ादी के बाद से ही लगातार इन लोगों को कुचला गया है। लेकिन अब यह भी सच है कि पख़्तून एकजुट होते जा रहे हैं । पख़्तून के लोग भारत का सहयोग चाहते हैं जिससे अलग स्वतंत्र वजीरिस्तान का निर्माण हो सके । वजीरिस्तान के 13 क्षेत्रों में पाक सेना तैनात है जो कि पख़्तून और अन्य जनजातियों पर क़हर बरपाते रहते हैं । इस बात पर भी बल दिया जाय कि दुनियाभर के पख़्तून समुदाय के लोगो को एकजुट हो कर संघर्ष तेज़ करना चाहिए । मानवता का समर्थन करते हुऐ भारत को भी समर्थन देना चाहिए । इसमें सोशल और डिजिटल मीडिया को भी योगदान देना चाहिए ।

श्री गोलक बिहारी राय –राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच-

पश्तूनों की अपनी अस्मिता का यह आंदोलन विगत सात दशकों से चला आ रहा है। पश्तूनों की वर्तमान युवा पीढ़ी अपनी स्वतंत्रता और मानवाधिकार के मूल्यों को भली-भांति पहचान और समझ रही है। मंसूर पश्तून के नेतृत्व में 'ये जो गुंडागर्दी है, इसके पीछे वर्दी है' नारे के साथ पाकिस्तानी सेना को चुनौती देते हुए पूरा पश्तून समाज अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए एक साथ खड़ा है। उल्लेखनीय है कि 2019 में 22 शहरों में एक साथ शांतिपूर्ण प्रदर्शन हुआ था, यह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। पश्तून समुदाय के लोग अपनी स्वतंत्रता को लेकर पाकिस्तान के अंदर आंदोलनरत है। इनका आंदोलन अब काफी जोर पकड़ चुका है। पाक सेना पश्तूनों पर बर्बर कार्रवाई करती रहती है, लेकिन इस समुदाय की आवाज अब जोर पकड़ने लगी है। अपनी स्वतंत्रता के लिए पश्तूनों के इस आंदालन को एक मजबूत आवाज व नैतिक समर्थन देना बेहद जरूरी है ।

औरंगजेब खान – पख्तून तहफूज मूवमेंट, (यूरोप के संस्थापक)

पश्तूनों के दुख-दर्द को हिंदुस्तान बेहतर तरीके से समझता है। पीटीएम (पख्तून तहफूज मूवमेंट) के अध्यक्ष को विश्वास है कि हिंदुस्तान उनकी मदद करेगा । पख्तून समाज की दुनिया में 50 मिलियन की आबादी है । उल्लेखनीय है कि 1.7 मिलियन पख्तून पाकिस्तान में रहते हैं । पाकिस्तान तालिबान को समर्थन और पनाह देता है और पख़्तून और अन्य समुदाय को यातना देता है । पाकिस्तान का असली चेहरा अब सामने आ गया है । दक्षिण वजीरिस्तान मे पख़्तूनों पर जुल्म किये गए, पाकिस्तान की मिलिट्री लगातार ज़ुल्म करती है । पख़्तून

आंदोलन का मुख्य उद्देश्य अपने मूलाधिकारों को प्राप्त करना है । पख्तून उन सभी हकों के अधिकारी हैं जो पाकिस्तान में लाहौर, इस्लामाबाद और करांची की अवाम को हासिल है ।

पश्तूनों की आबादी का अधिकांश हिस्सा आज भी पाकिस्तान के क्षेत्र में ही रहता है। पाकिस्तान की सेना ने हमेशा से तालिबान को संरक्षण देकर पश्तूनों व दूसरे समुदायों को बर्बर तरीके से सताया। उन्हें लक्ष्य बनाकर यातनाएं दीं और कई जगहों पर विस्थापित भी किया। पश्तून समुदाय के लोग पाक सरकार की ओर से प्रयोजित आतंकवाद से हमेशा पीड़ित रहे हैं। पी.टी.एम मांग है कि पाकिस्तान अपने मूल संविधान का पालन करे ताकि पाक सेना की दहशतगर्दी पर लगाम लग सके। पश्तून समाज विशेषकर अफगानिस्तान से लेकर पाकिस्तान के सीमाई क्षेत्रों में पीड़ित है और अपने अस्तित्व को लेकर संघर्षरत है। पाकिस्तान के जुल्म बेहिसाब हैं, लेकिन यह संघर्ष आज भी जारी है। पाक सेना की बर्बर कार्रवाई अब किसी से छिपी नहीं है और बेनकाब हो रही है। पाकिस्तान की मीडिया ने भी पश्तूनों की दुर्दशा और समस्याओं को हमेशा दरकिनार किया। पाकिस्तान ने अमेरिका से मिलने वाले फंड का भी दुरुपयोग किया और पाक सेना से साजिश के तौर पर इससे आतंकवाद को बढ़ावा दिया, यानि पाकिस्तान ने अमेरिका को भी हमेशा झांसे में रखा।

आशीष शुक्ला- रिसर्च फेलो आई.सी.डब्ल्यू.ए

पश्तून तहफूज मूवमेंट अब पश्तूनों की आवाज बन चुका है। पिछले तीन-चार सालों में यह आंदोलन परवान चढ़ने लगी है और इसकी आवाज दुनिया में सुनी जाने लगी है। पश्तून समुदाय की समस्याओं की तरफ न तो किसी सरकार और न ही किसी अंतरराष्ट्रीय संगठन की ध्यान गया, आज इसे एक उचित मंच देने की दरकार है। पाक सेना इस आंदोलन को दबाना और कुचलना चाहती है ताकि ये मामला अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सामने न आए। इसलिए पाक सेना की बर्बरता और जुल्म की दास्तां आए दिन सामने आती रहती है। जबकि पश्तून समुदाय केवल अपने संवैधानिक अधिकारों की मांग कर रहा है। आज पख़्तून तहफ़ूज मूवमेंट पख़्तूनों की आवाज़ बन चुका है। पिछले 10 सालों मे इस आंदोलन ने तेज़ी पकड़ी है, जिसके कारण दुनिया अब पख़्तूनों को जानने लगी हैं । अब इस आंदोलन की तरफ अंतराष्ट्रीय संगठन भी ध्यान देने लगे हैं, अब इसे सिर्फ एक बड़े और विस्तृत मंच की दरकार है । पाकिस्तान की सेना इस आंदोलन को कुचलना चाहती थी पर अब इसे अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलने से परेशान है । पख़्तून समाज अपने हक़ की मांग कर रहा है ।

प्रतीक जोशी- ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी (लंदन)-

काबुल से लेकर कश्मीर तक पाकिस्तान ने छद्म युद्ध (प्राक्सी वार) छेड़ रखा है। जबकि पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था काफी लचर स्थिति में है। बावजूद इसके वह पश्तूनों पर जुल्म करने से बाज नहीं आ रहा है। पाकिस्तान ने पश्तूनों का हमेशा से इस्तेमाल किया । इस बात का कई सालों के बाद इस समुदाय को अहसास हुआ। पिछले 10 सालों में वार ऑफ टेरर के नाम पर वजीरिस्तान में पश्तूनों पर जुल्म बढ़े और इस क्षेत्र में लाखों लोग बेघर हुए। पश्तून समुदाय के लोग कई मोर्चों पर प्रभावित हुए, जिसके बाद पश्तून तहफूज मूवमेंट के जरिये पाकिस्तान के हुक्मरानों के समक्ष आवाज उठाई जाने लगी। पाक सेना के जुल्मों के खिलाफ लोग भी एकजुट होने लगे हैं। पश्तूनों में अब काफी बदलाव देखने को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि पश्तून समुदाय भारत से एक भावनात्मक लगाव महसूस करता है। ऐसे में इस समुदाय की बदहाली की तरफ अब भारत को जरूर देखना चाहिए।

वेबिनार में यह बात स्पष्ट उभरकर सामने आया कि पाकिस्तान आतंकवादी संगठनों का घर है । पाकिस्तान भी गुप्त रूप से उइगर मुसलमानों को सहारा दे रहा है जो चीन से लड़ रहे हैं। बलोचिस्तान के चमन क्षेत्र में क्वेटा शूरा के साथ-साथ पाकिस्तान ने भी इस आतंकवादी के सहारे भारत अफगानिस्तान और ईरान सहित पड़ोसी देशों को अस्थिर करने के लिए प्रॉक्सी के रूप में उपयोग किया है। उन्होंने बुजुर्गों को मारना शुरू कर दिया क्योंकि वे पाकिस्तान की सैन्य संपत्ति के खिलाफ स्थानीय लोगों को लामबंद करने में सक्षम थे। एजेंसियों ने

असमींदर वली खान द्वारा चलाए जा रहे अवामी राष्ट्रीय पार्टी के नेताओं को मारना शुरू कर दिया था, मुहम्मद अली का बड़ा भाई पीटीएम के एक वरिष्ठ वकील था। पाकिस्तान में पश्तून, बलूच और सिंधी कैदियों की तरह रहते हैं। यहां तक कि सैन्य और नौकरशाही में भी पश्तून खतरे में हैं। पश्तून पाकिस्तान में पिछले 40 वर्षों से पीड़ित हैं। भारत को क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए एक निर्णायक भूमिका निभानी चाहिए।

इस अंतर्राष्ट्रीय वेबीनार का संचालन डा. एम. महताब आलम रिजवी ने किया। राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच के अध्यक्ष जेनरल आर एन सिंह ने सभी विशेषज्ञों और प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रस्तुति : हर्षिता यादव, जोधपुर, राजस्थान